The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मन्नू भंडारी की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ

रीना गिरी

शोध छात्रा , श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी , भिलाई, rinagiri1806@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15861799

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

उदाहरणार्थ , महाभोज, दृष्टिकोण, उपन्यास, साहित्य, संघर्ष

ABSTRACT

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाकारों में से एक है उनकी एक महत्वपूर्ण रचना "एक कहानी यह भी" हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है| मन्नू भण्डारी अपनी इस रचना के द्वारा अपना नाम अमर कर चुकी है | इनकी सुप्रसिद्ध आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' हिंदी साहित्य की एक सार्थक कृति है | जिसमे एक स्त्री की पीड़ा, व्यथा, वैवाहिक जीवन के कष्ट, स्त्री की घुटन इत्यादी का विस्तृत रूप से विश्लेषण किया गया है | यह आत्मकथा दयनीय जीवन की वास्तविकता को उजागर करने वाली आत्मकथा है | 'एक कहानी यह भी' में लेखिका ने अपने सम्पूर्ण जीवन का व्याख्यान किया है | लेखिका ने अपने जीवन काल में हर तरह की रचनाओं को प्रकाशित किया है जैसे की – कहानी , नाटक, आत्मकथा ,उपन्यास इत्यादी | इनकी सर्वश्रेष्ठ उपन्यास रचनाओं में से महाभोज, एक इंच मुस्कान और आपका बंटी प्रमुख है | इनकी प्रसिद्ध कहानियों में से यही सच है, एक प्लैट सैलाब, मैं हार गयी, तीन निगाहों की एक तस्वीर इत्यादि है | एक महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में इनकी जीवन गाथा सराहनीय योग्य है | सफल लेखिका के तौर पर इन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा एक महान मुकाम हासिल किया है | एक कहानी यह भी में स्त्री की संघर्ष, पीड़ा, उत्पीड़न उसकी व्यथा को उजागर कर उसकी सम्पूर्ण जीवन शैली की व्यथा को समाज के सामने उजागर किया है |

प्रस्तावना –

मध्यप्रदेश के भानपुर में जन्मी मन्नू भंडारी का जन्म एक मध्यवर्गी परिवार में हुआ था| इनका वास्तविक नाम महेंद्र कुमारी था| इनके पिता का नाम **सुख संपत राय** था तथा माता का नाम **अनूप कुमारी** था | मन्नू भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई उसके बाद उन्होंने कलकता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की | उसके बाद 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' से हिंदी भाषा और साहित्य में एम् .ए की उपाधि हासिल की | बनारस में मन्नू जी की मुलाकात ऐसे बुद्धिजीवी लोगों के साथ हुआ जिससे इन्हें अपनी लेखनी में काफ़ी सहायता मिली | मन्नु भंडारी जी ने अपनी एम् . ए की परीक्षा समाप्त करने के बाद ही अध्यापन कार्य शुरू कर दिया | इनके परिवार में सभी लोग शिक्षित और सुशील थे | मन्नू भंडारी कुल पांच भाई- बहन थे जिसमे वे सबसे छोटी थी | हमारा समाज एक पितृस्तात्मक समाज है इनके पिता को आर्थिक तौर पर काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था जिससे इनके पिता की मानसिकता काफ़ी कुंठित हो चुकी थी | पिता के भय से पूरा परिवार काँपता था | मन्नू जी लिखती है -''सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम से कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदारी बनाएं |''[1]

इनकी माता काफ़ी गम्भीर और धैर्यवान थी पिता के | द्वारा बड़ी बहन से तुलना मन्नू के आंतरिक हृदय में घाव कर देता हमारे समाज में लड़कियों और स्त्रियों को तभी महत्व दिया जाता है जब वे सुन्दर हो , सुन्दर होने का अर्थ यह नहीं की वह मन से सुन्दर हो,सुशील हो , बल्कि शारीरिक तौर पर और उनके रंग के आधार पर ही उनको महत्व दिया जाता है | हमारे भारतीय समाज में यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है की लड़कियों का आकलन उनके रंग के आधार पर होगा इस मामले में मन्नू जी **काली** थी जिस कारण वे पिता की प्रिय नहीं थी| एक कहानी यह भी में मन्नू जी ने १९४६-१९४७ तक की देश में होने वाली स्वतंत्रता की घटनाओं का व्याख्यान किया है | मन्नू जी भी धीरे – धीरे युवा हो रही थी , उस समय देश में स्वतंत्रता के लिए होने वाली जो भी आन्दोलन हो रहे थे मन्नू जी उनमें भाग लेती और स्वाधीनता संग्राम के नारे लगाने लगती, जब यह बात उनके पिता को पता चली तो उनके पिता को यह सहनीय नहीं था| इसी तरह अन्या से अनन्या तक में भी प्रभा खेतान जी के साथ भी उनकी माँ उनसे नाराज हो जाती है की वे उम्र से पहले ही बड़ी हो गई | उस समय एक लड़की का लडकों के साथ उठाना , बैठना , उनके साथ सड़कों पर खुले आम नारे लगाना यह कोई आम बात नहीं थी फिर भी मन्नु जी ने इन सबकी परवाह किये बिना पुरुषो के संग कन्धा से कन्धा मिलाकर चलती है | ''पिता का चरित्र अपनी सारी गरिमा ,सारी करुणा और सारे अंतर्विरोधों के साथ मेरे मन मेमन ज्यों का त्यों अंकित है – बार -बार मुझे लिखने के लिए प्रेरित भी करता है ,लेकिन कभी

साहस नहीं हुआ कि उन पर कलम चलाऊं | जानती हूँ मैं उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ न्याय नहीं कर पाउंगी ....कुछ अपनी सीमा के कारण तो कुछ अपने पूर्वग्रहों के कारण !"[2]

एक कहानी यह भी में मन्नू जी अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक सामाजिक बन्धनों , सामाजिक कुरीतियों , पितृस्तात्मक बन्धनों को अपनी लेखनी द्वारा महिलाओं का समाजिक स्तर पर किस तरह शोषण किया गया है इसका इन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी लेखनी में प्रस्तुत किया है | इस आत्मकथा में स्त्री को सहनशीलता का प्रतिक माना गया है अगर स्त्री सह रही है तभी उसका गृहस्थ जीवन भी सुखी होगा अथार्त इनका अपना कोई वजूद नहीं था | इन सभी घटनाओं को लेखिका ने अपनी लेखनी में चित्रित किया है इससे यह ज्ञात होता है की लेखिका अपनी लेखनी में काफ़ी गंभीर रही| जब ये कलकता में थी तब इनकी मुलाक़ात हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार **राजेंद्र यादव** जी के साथ हुई , इन दोनों की नजदीकियों का कारण इनकी लेखनी थी | दोनों को सम्बन्ध स्थापित करने में लेखनी ने सेतु का काम किया | दोनों पहले पुस्तकों , लेखकों और साहित्यिक विषयों पर खूब चर्चा करते बाद में धीरे - धीरे इनके बीच व्यक्तिगत जीवन पर चर्चा होने लगी | फिर बाद में दोनों ने सन् २२ नवम्बर १९५९ में विवाह किया |

इस प्रकार हम देखते है की किस प्रकार मन्नू जी अपने जीवन के सभी उत्तार – चढाव में भी खुद को एक सशक्त महिला के रूप बनाएं रखती है | इनके लिए यह आसान नहीं था क्यों की उस समय महिलायों को इतनी छुट नहीं मिली थी | मन्नू जी और राजेंद्र यादव ,दोनों ने अपनी लेखनी में एक महत्वपूर्ण उपन्यास की रचना की जिसका नाम "**एक इंच मुस्कान**" | यह उपन्यास सन 1962 में प्रकाशित हुआ | मन्नू भंडारी की कहानियों में पारिवारिक मूल्यों को काफ़ी महत्त्व दिया गया है | पारिवारिक मूल्यों के साथ -साथ जीवन के हर पहलु पर इन्होनें खुल कर विश्लेष्णात्मक तरीके से चर्चा की है | इनकी कुछ महत्वपूर्ण रचना है – **सज़ा , अकेली , तीसरा आदमी** है | इन सभी कहानियों में वे पारिवारिक परम्पराओं और सामाजिक यथार्थ को लेकर चलती है जिससे इन्हें समाज में एक विशेष रूप से पहचान मिली | इनकी एक महत्वपूर्ण कहानी है जिसका नाम है "अकेली"है | यह बहुत ही मार्मिक कहानी है | यह सम्पूर्ण कहानी सोम बुआ के इर्द -गिर्द घुमती है जिसका पति जीवित तो है पर उनके साथ नहीं रहता है | इसके जवान बेटे की मृत्यु हो चुकी है | उसके लिए यह समाज , यह लोग सभी शापित के नजर से देखते है | उनका सोमा बुआ के प्रति जो दृष्टिकोण है वह काफ़ी ओछा है | मन्नू भंडारी की यह रचना आत्मस्मरण है | '**अकेली**' कहानी के माध्यम से मन्नू जी ने न केवल सामाजिक अपितु आर्थिक , राजनैतिक, साहित्यिक सभी पहलुओं पर महत्वपूर्ण

प्रकाश डाला है | उनकी परिवेशगत स्थितियों को पाठक के सामने रखते ही जब तक पाठक के मन में उत्सुकता या बैचैनी न उत्पन्न हो , उनकी आत्मा को जब तक न झकझोरा जाय तब तक लेखक की लेखनी सफल नहीं होती है |

इन सभी दृष्टिकोण के माध्यम से लेखिका ने अपनी लेखनी को सफल बनाने का अथक प्रयास किया है | मन्नू भंडारी इस तरह की कहानियों को लिखने में तभी सफल हो पाती है क्यों उनका हृदय भी काफी कोमल , निश्छल और स्नेहमय था | वे जीवन की हर शैली को बखूबी और बहुत ही बारीक तरीके से जानती थी | उनकी यह एक अनोखी शैली थी जो की बहुत ही कम लेखिकाओं में पायी जाती है |

मन्नू भंडारी की सुप्रसिद्ध रचना आपका बंटी और महाभोज जैसे महत्वपूर्ण उपन्यास है | इन उपन्यासों में इन्होंने अपने जीवन की सम्पूर्ण भावात्मक और व्यवहारिक जीवन का लेखा – जोखा अपनी रचना में लिखा है | इस रचनाओं में उन्होंने सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है | इन्होंने अपने जीवन में सभी प्रकार की रचनाओं को रचा है | इनकी जीवन की सबसे गहरी बात यह थी की इन्होंने शादी तो कर ली थी पर जीविका चलाने का सम्पूर्ण भार इन्हीं पर था | राजेन्द्र यादव जी ने पहले ही कह दिया था की वे सांसारिक दायित्वों को नहीं संभाल पायेंगें | मन्नू जी ने बाहरी कर्तव्यों को तो संभला ही साथ ही साथ घर के सारे कर्तव्यों को भी बखूबी जिम्मेदारी के साथ निभाया |

प्रभा खेतान अन्या से अनन्या में कहती है की – ‘’ इन तमाम दबाओं के बीच मुझे बहुधा लगता कि मैं बिलकुल स्वतंत्र हूँ क्यों की मैं अकेली हूँ | जीने के लिए आखिर क्या चाहिए और कितना ? जितना चाहिए उतना मेरे पास है | मैं अकेले जी कर दिखा दूंगी | लेकिन फिर भी जीने की तमाम कोशिश के बावजूद हर दूसरा मेरे लिए एक जीवित आतंक था | लकीर के इस तरफ शादीशुदा औरतें थी | ‘’[3]

इन्होनें अपने जीवन में बहुत सी उपलब्धियों को पाया | इन उपलब्धियों को पाना इतना आसान नहीं था इनके सजग प्रयास और साहित्य के प्रति समर्पण के द्वारा ही यह संभव हो पाया | इनमें सारी उपलब्धियों को पाने की जो ललक और तत्परता थी वह अतुलनीय है | इनके जीवन में असंख्य मुसीबते आई पर अपने मनोबल को कभी भी इन्होंने डगमगाने नहीं दिया |

मन्नू जी लगातार अपने सभी कर्तव्यों का पालन करती जा रही थी | इन्होंने अपने जीवन की लगातार जिजीविषा को बनाये रखा और लेखनी में स्वयं को इतना व्यस्त कर लिया की उनके जीवन में कुछ भी लेखनी के बाद ही आता | इन्होने अपने जीवन की तमाम परिथितियों में चाहे वह सामाजिक हो , राजनीतिक हो , सांस्कृतिक हो , साहित्यिक हो सभी क्षेत्रों में स्वयं को मजबूती के

साथ खड़ा रखा | इन्होंने अपनी रचनाओं में पारिवेशिक स्थितियों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है | पारिवेशिक स्थितियों को अपनी लेखनी में उतारने से वे पाठकों के हृदय में उतर जाती है | कोई भी लेखनी अगर पाठक के हृदय में उतर जाय तो यह कोई आम बात नहीं इससे लेखक की लेखनी सार्थक हो जाती है |

मन्नू भंडारी की आत्मकथा '**एक कहानी यह भी** के लिए इन्हें **केके बिरला फाउन्डेशन से 18 वें व्यास सम्मान** से सम्मानित किया गया था | मन्नू जी की ये रचना इन्होंने पूरी इमानदारी और वेबाकी के साथ लिखी गई है | इनकी यह कृति एक भिन्न प्रकार की आत्मकथा है | इनकी यह रचना कर्म के आधार पर , सामाजिकता के आधार पर , राजनीतिकता के आधार पर हर क्षेत्र में इन्होंने रौशनी डाली है | इस आत्मकथा में इन्होंने अपने जीवन की तमाम सभी घटनाओं को वर्णित किया है | मन्नू जी एक घरेलु महिला थी | इनके लिए इनका घर महत्त्व रखता था , राजेन्द्र यादव जी अपनी जीवन शैली को आधुनिक पैटर्न की तरह जीना चाहते थे | ठीक इसके विपरीत राजेन्द्र यादव जी को अपनी ख्याति , अपनी लेखनी, यश , प्रशंसा अति प्रिय थी | राजेन्द्र यादव जी को केवल अपनी ख्याति प्रिय थी | इन्होंने पारिवारिक कार्यों में कभी भी मन्नू जी का हाथ नहीं बटाया , शादी के कुछ दिनों के बाद ही इन्होने स्पष्ट रूप से मन्नू जी को कह दिया था ही वे अपने जीवन को अपने हिसाब से जीना चाहते है उनका कहना था की वि मन्नू जी के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और मन्नू जी उनके जीवन में हस्तक्षेप न करें | आखिरकार इन्होंने राजेन्द्र यादव की इन सभी लक्षणों को देखकर शादी के तीस साल के बाद इन्होंने राजेन्द्र यादव को तलाक दे दिया | तलाक के बाद भी राजेन्द्र यादव जी के साथ इनके सम्बन्ध काफी अच्छे रहें | इनके बीच मित्रता और संवाद आजीवन जीवित रहता है | इसी के सन्दर्भ में अमृता प्रीतम कहती है की –'' तुम मुझे संध्या बेला में क्यों मिले ? जिंदगी का सफर ख़तम होने वाला है तुम्हें मिलना था तो जिंदगी की दोपहर में मिलते ,उस दोपहर का सेंक तो देख लेते | '' [4]

इन पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है की अंतिम समय में पश्चाताप करके भी क्या फायदा जब जीवन का सारा समय असमंजश में ही गुजर गया |

निष्कर्ष-

अंत में मन्नू जी की आत्मकथा में इन्होंने अपने जीवन की सम्पूर्ण व्यथा को अपनी इस आत्मकथा में उढ़ेल दिया | अपने जीवन की पूरी कहानी को इन्होंने जस का तस अपनी लेखनी में लिखा है | जीवन के अंतिम पलों में इनको बिमारियों ने घेर लिया

, बीमारियों से जूझते हुए भी इन्होंने बहुत सी रचनाओं की रचना की थी | इनकी लेखनी के बारे में हमें किसी भी तरह की आलोचनात्मक रूप कभी भी देखने को नहीं मिला|

मन्नू जी की पहली कहानी संग्रह - ' **मैं हार गयी** ' 1957 में लिखी गयी थी | जब वे कलकता के बालीगंज में अध्यापन कार्य कर रही थी | यह कहानी संग्रह पाठको को बहुत पसंद भी आई | मन्नू जी के अब तक लगभग चार उपन्यास , बारह कहानी संग्रह , दो नाटक , एक पटकथा और तीन बाल साहित्य प्रकाशित हो चुके है | इनकी बहुत सारी कृतियों से फिल्में भी बनाई गयी है | इनकी रचना ' **यही सच है** ' को लेकर **'रजनीगंधा 'नामक फ़िल्म** भी बनाई गयी है | यह फ़िल्म लोगों को काफी प्रिय भी लगी | सुप्रसिद्ध फ़िल्म स्वामी के लिए इन्होंने संवाद भी लिखे थे | मन्नू जी को साहित्यिक योगदान और कृतियों के लिए सम्मानित भी किया गया था | इन्हें दिल्ली हिंदी अकादमी का वर्ष 2006-2007 में **शलाका सम्मान** से सम्मानित किया गया था | मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन में इनको **भवभूति अलंकरण से** सम्मानित किया गया था | इसके अलावा इनको उत्तर - प्रदेश हिंदी संस्था ,भारतीय भाषा परिषद् (कोलकाता) , बिहार राज भाषा परिषद् , महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी आदि संस्थानों से भी उनकी कृतियों को सम्मानित किया जाएगा |

मन्नू भंडारी की रचनाओ की सबसे बड़ी विशेषता यह है की जब वे लिखती है तो वे अपने पात्रों के साथ अपनत्व की भावना से जुड़ जाती है | उन्हें वह पात्र अपने परिवार की तरह लगने लगता है , किसी भी लेखक की यह विशेषता होनी ही चाहिए की वह पात्रों के साथ बड़ी गहराई से जुड़ जाए | मन्नू जी अपने ही शब्दों में कहती है की जब वे अपनी रचना को समाप्त करती है तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है की वे किसी अपने के साथ बिछुड़ रही है | आत्मकथा लिखना इतना आसान नहीं होता पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम जी अपनी लेखनी में महसूस करते हुए कहती है की –''आत्मकथा लेखक की अपनी आवश्यकता मनाते हुए यथार्थ से यथार्थ तक पहुँचने की प्रक्रिया है |"[5]

मन्नू जी की लेखनी की अभिव्यक्ति बहुत ही अद्भुत थी , वे लेखनी के माध्यम से जीवन के हर उस पड़ाव पर पहुँच जाती है जहाँ वे वास्तविक रूप से नहीं पहुँच सकती है | उनकी अभिव्यक्ति इस प्रकार की होती है की पाठक खुद को उस रचना में जीवंत मानने लगता है | मन्नू जी की रचनाएँ बहुत ही आत्म -विश्लेषण और आत्म – निरिक्षण होती थी | एक भारतीय लेखिका होने के कारण उनका भारतीय लोगों की मानसिकता पर काफ़ी रुझान था | वह हिंदी साहित्य की दुनिया में बहुत ही अग्रणी महिला थी | उनकी रचनाओं में सभी प्रकार की सामंजस्य को देखने को मिलेगा | उन्होंने भारतीय परिवेश की सभी पहलुओं को केंद्र बिंदु बनाकर सम्माज के सामने लाने का प्रयास किया | इनकी कुछ रचनाओं में से कुछ महत्वपूर्ण रचना इस

प्रकार है - **तीन निगाहों की एक तस्वीर ,त्रिशंकु , श्रेष्ट कहानियाँ,आँखों देखा झूठ ,नायक खलनायक विदूषक , स्वामी , कलवा |**

पटकथाओं में – रजनी , निर्मला , स्वामी , दर्पण महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है |

सन्दर्भ सूचि –

1.भंडारी,मन्नु (2023)एक कहानी यह भी ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,पृष्ठ-16

2.भंडारी , मन्नू (2023) एक कहानी यह भी , राधाकृषण प्रकाशन , पृष्ट – 18

3.खेतान प्रभा , अन्या से अनन्या , राजकमल प्रकाशन , पृष्ट – 172

4 .प्रीतम ,अमृता (2018) रसीदी टिकट , किताब घर , पृष्ट – 53

5 .प्रीतम ,अमृता , रसीदी टिकट , किताब घर , पृष्ट – 149